धारावाहिक संख्या - 23

धारावाहिक शीर्षक - "मशीनें : मन वाली"

स्क्रिप्ट - Dr Manas Pratim Das

अनुवाद - Shriniwa

अवधारणा और समन्वय: B.K.Tyagi

रेडियो धारावाहिक की इस कड़ी में जनरल एआई (General AI) की अवधारणा दुनिया भर में इससे जुड़ी कोशिशों के बारे में बताया गया है। इसमें रोबू नाम का एक रोबोट है जिसे भौतिकी के एक शिक्षक ने अपने कोचिंग सेंटर में छात्रों को प्रोत्साहित करने के मकसद से बनाया है। हालांकि इस रोबोट में मानवीय भावनाओं को लेकर प्रतिक्रिया करने के मामले में काफी सीमित क्षमताएं हैं, लेकिन फिर भी आखिर में हमें इस रोबोट का काफी चौंकाने वाला स्वरूप देखने को मिलता है।

पात्र परिचय

राहुल - कारोबारी (45 वर्ष)
सुमित्रा - राहुल की पत्नी (40 वर्ष)
अस्मिता - राहुल की बेटी / ग्यारहवीं की छात्रा
मीना - घरेलू सहायक (30 वर्ष)
डिलीवरी बॉय - 25 वर्ष
रोबू - रोबोट
भास्कर - शिक्षक (45 वर्ष)
नवीन - ग्यारहवीं का छात्र
अंतरा - ग्यारहवीं की छात्रा
रंजन- ग्यारहवीं का छात्र

ज्योति - बीडीओ (खंड विकास अधिकारी) 40 वर्ष

(राहुल (45 वर्ष) एक कारोबारी हैं और अभी अपने ड्राइंगरूम में आराम कर रहे हैं। उनकी पत्नी सुमित्रा अपनी बेटी की पढ़ाई में मदद कर रही हैं। उनकी बेटी अस्मिता ग्यारहवीं कक्षा में विज्ञान की छात्रा हैं। परिवार की घरेलू सहायक मीना (30 वर्ष) रसोई के काम में व्यस्त हैं। दरवाजे की घंटी बजती है और राहुल दरवाजा खोलते हैं।)

राहुल : जी, बताइए।

डिलीवरी बॉय : नमस्ते सर। मैं पास के डिपार्टमेंटल स्टोर से आया हूं। आपके यहां से मक्खन के लिए ऑर्डर मिला था।

राहुल : मक्खन ! जरा एक मिनट रूको। **(ऊंची आवाज़ में)** सुमित्रा... सुनो सुमित्रा...।

(सुमित्रा जल्दी से आती है)

सुमित्रा : अरे, क्या हो गया..। इतनी जोरों से क्यों चिल्ला रहे हो। मुझे लगा, क्या जो हो गया....। डरा ही दिया तुमने तो।

राहुल : नहीं-नहीं। डरने की कोई बात नहीं है। ये भैयाजी पास के डिपार्टमेंटल स्टोर से आए हैं। तुमने मक्खन की डिलीवरी का ऑर्डर किया था क्या ?

सुमित्रा : मैंने ? नहीं तो...। मैंने तो कोई ऑर्डर नहीं किया था। अभी तो फ्रिज में मक्खन के कई सारे पैकेट्स पड़े हैं।

राहुल : मुझे भी कुछ समझ में नहीं आ रहा है। किसने दिया होगा मक्खन का ऑर्डर ?

सुमित्रा : हां... पता नहीं... मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है।

राहुल : लेकिन ये भैयाजी भी तो बगैर ऑर्डर के डिलीवरी करने नहीं आएंगे..। क्यों जी ?

डिलीवरी बॉय : जी सर...। ये देखिए सर...। इस स्लिप में आपका नाम, मकान नंबर और फोन नंबर भी लिखा है। ये देखिए... 200 ग्राम के दो पैकेट.. मक्खन।

सुमित्रा : हां... ये तो है...। स्लिप में ऑर्डर देने का वक्त भी तो लिखा है। कल रात के नौ बजे।

राहुल : क्या कहा...। रात के नौ बजे...। जरा रुको ...। मैं फ्रिज में कुछ देखकर आता हूं।

(राहुल तेजी से जाकर फ्रिज को खोलता है। फ्रिज में देखते ही वो आवाज़ लगाता है... मीना... मीना... / मीना खाना बनाना छोड़कर तुरंत उसके पास आती है)

मीना : (डर के साथ / सहमे स्वर में) जी साब...। कुछ गलती हो गई क्या ?

राहुल : यहां मक्खन रखा था...। दिख नहीं रहा है...।

मीना : कहां साब... ? मैंने तो फ्रिज से बाहर नहीं निकाला साब...।

राहुल : हां... हां... वो तो ठीक है...। लेकिन तुमने रखा कहां। "बटर-ट्रे" में तो नहीं दिख रहा है।

मीना : साब... मैंने तो उसे बाहर.....।

राहुल : अब समझ में आ गई मक्खन के ऑर्डर की पहेली...। हर चीज को वहीं रखा करो जहां उसकी जगह है। समझी मीना...।

मीना : जी साब...गलती हो गई। अब नहीं भूलूंगी।

सुमित्रा : (बाहर से जोर से आती आवाज़) भैया जी इंतजार कर रहे हैं...। जल्दी आइये बाहर...। इनकी समस्या तो सुलझाइये पहले...।

राहुल : आ रहा हूं...। और समस्या भी सुलझ गई है। (वापस बाहर दरवाजे पर आता है)

डिलीवरी बॉय : सर, ऑर्डर में कुछ गड़बड़ी हो गई क्या ?

राहुल : गड़बड़ी तुमसे नहीं बल्कि मेरे नए फ्रिज से हुई है।

डिलीवरी बॉय : (चौंकते हुए) फ्रिज की वजह से.. ?

राहुल : हां, फ्रिज से। दरअसल ये मेरा नया फ्रिज है। (रहस्यमय अंदाज में) और इसका तार सीधे इंटरनेट से जुड़े हैं।

डिलीवरी बॉय : मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है। फिलहाल मैं इस पैकेट को वापस ले जाऊं क्या ?

राहुल : नहीं... नहीं भैया। मैं तो आपके स्टोर की इतनी फास्ट सर्विस का मुरीद हूं। मक्खन के पैकेट को यहीं दे जाओ। और इसे मेरे महीने के बिल में जोड़ देना।

डिलीवरी बॉय : जी ठीक है...। लेकिन आपका फ्रिज है बड़े कमाल का।

राहुल : हां..। ये फ्रिज इस तरह से डिजाइन किया गया है कि अगर इसके अंदर रखी कोई चीज खत्म हो जाए तो खुदबखुद ऑर्डर हो जाता है। कल हुआ यूं कि मीना ने मक्खन का पैकेट दूसरी जगह रख दिया। मीना हमारे घर में ही काम करती है। ऐसे में मशीन को लगा कि मक्खन खत्म हो गया है और उसने ऑनलाइन ऑर्डर दे दिया।

सुमित्रा : ये नई मशीनें भी ना... बस... आराम कम और परेशानी ज्यादा देती हैं।

डिलीवरी बॉय : ये तो बड़ा जबरदस्त फ्रिज है सर। (हल्की हंसी के साथ) अब ये जमाना भी आ गया कि मशीन खुद ही ऑर्डर करने लगी है।

राहुल : हां...। वो तो है... । चलिए... आपका शुक्रिया...। डिलीवरी के लिए।

डिलीवरी बॉय : जी नमस्ते...**। (खुद ही बुदबुदाते हुए जाता है)** मशीन... मक्खन का पैकेट हटना... खुद ही ऑर्डर हो जाना... ऑनलाइन...।

राहुल : सुमित्रा...। दरवाजा भी बंद कर दो। **(दरवाजा बंद करने की आवाज़)**

(अस्मिता ड्राइंग रूम में आती है)

अस्मिता : क्या हुआ पापा ? कोई सेल्समैन था क्या ?

राहुल : नहीं... नहीं ...कुछ नहीं। पास वाले डिपार्टमेंटल स्टोर से डिलीवरी बॉय आया था। हमारे इस नए फ्रिज की ऑटोमेटिक मार्केटिंग की खूबी के चलते आज उसे यहां आना पड़ा।

अस्मिता : आपके इस नए IOT फ्रिज ने तो अभी से ही दिक्कतें शुरू कर दी हैं। पापा, आपका ये इंटरनेट ऑफ थिंग्स फ्रिज (IOT फ्रिज) ना हुआ ... कोई नई बला हो गई।

सुमित्रा : अस्मिता, तभी तो मैं कहती हूं... नई टेक्नॉलॉजी मतलब... नई मुसीबत।

अस्मिता : नहीं मम्मी...। ऐसा भी मत कहो...। नई टेक्नालॉजी से हमें कई सारे फायदे भी तो हैं। उन फायदों को हम कैसे भुला सकते हैं।

राहुल : सही कहा अस्मिता तुमने। मान लो कि किसी वजह से हम सबको घर से बाहर जाना पड़े... और मीना भी घर पर ना हो...। और अचानक हमको ख्याल आए कि हमने तो पानी के पंप का स्विच बंद ही नहीं किया...। ऐसे में हम लोग क्या करेंगे ?

सुमित्रा : क्या करेंगे...। हम लोग एक साथ ऐसे घर से बाहर जाएंगे ही नहीं।

अस्मिता : मम्मी जी...। कभी - कभी ऐसा भी हो सकता है।

राहुल : लेकिन अगर वो पंप आईओटी (IOT) यानी इंटरनेट ऑफ थिंग्स (Internet of Things) का हिस्सा हुआ तो इसे हम अपने मोबाइल फोन से भी ऑफ कर सकते हैं। चाहे हम घर से बाहर कहीं भी हों, हम हर वक्त इससे जुड़े ही रहते हैं। यही इसका बड़ा फायदा है।

सुमित्रा : (मजाकिया अंदाज में) कहीं किसी दिन तुम्हारे आईओटी पंप ने खुद ही स्पेयर पार्ट्स का कोई ऑर्डर दे दिया तो.....। फिर बेचारा डिलीवरी बॉय परेशान होगा...।

(राहुल और अस्मिता दोनों हंसते हैं)

अस्मिता : मम्मी... आप भी बस....।

सुमित्रा : (दिखावटी गुस्से के अंदाज में) मैं क्या....। बेवकूफ हूं क्या मैं ?

राहुल : (हंसते हुए) नहीं... नहीं... ऐसी बात नहीं है। अस्मिता तो कह रही है कि...।

सुमित्रा : चलो ठीक है... तुम बाप-बेटी अपनी हंसी तो रोक लो पहले..। अस्मिता ये बताओ कि तुम्हारी कल की तैयारी का क्या हुआ ? सामान तो पैक कर लिया है ना ?

राहुल : कल कहीं जा रही हो क्या अस्मिता ? मुझे तो तुमने कुछ नहीं बताया।

अस्मिता : हां पापा...। मैं बस बताने ही वाली थी। दरअसल हमारे कोचिंग सेंटर की ओर से हम लोग कल राहत सामग्री बांटने के लिए जा रहे हैं। हाल में आए चक्रवात प्रभावितों के गांवों में जाने वाले हैं हम लोग।

राहुल : अच्छा। लेकिन कहां जाने का इरादा है ? सुंदरबन की ओर तो नहीं आ रहे हो ?

अस्मिता : (हल्की झिझक के साथ) हां पापाजी। आपको तो मालूम ही है कि वहां लोगों को काफी नुकसान पहुंचा है।

राहुल : हां, मुझे वहां के हालात पता हैं। मैं तुम्हारे राहत कार्यों के खिलाफ नहीं हूं लेकिन तुम्हें शायद वहां की स्थिति का अंदाजा नहीं है। वहां जगह-जगह पानी जमा रहता है और तुम जैसे बच्चों के लिए वहां जाना सुरक्षित नहीं है। वैसे भी तुम लोगों को ऐसे इलाकों में राहत और बचाव कार्यों की कोई ट्रेनिंग तो मिली नहीं है।

सुमित्रा : मैंने तो इससे पहले ही कहा था कि वहां जाना सुरक्षित नहीं है। लेकिन इसकी ज़िद तो आप जानते ही हैं।

अस्मिता : लेकिन पापा, हम वहां यूं ही नहीं जा रहे हैं। हम पूरी तैयारी के साथ जा रहे हैं और आपको परेशान होने की बिल्कुल भी जरूरत नहीं है।

राहुल : मैं कुछ समझा नहीं। क्या प्रशिक्षित राहत-बचाव कर्मी (trained relief workers) भी तुम्हारे साथ में जा रहे हैं ?

अस्मिता : राहत कर्मी तो नहीं लेकिन हमारे साथ रहेगा एक रोबोट।

सुमित्रा: (चौंकते हुए) रोबोट !

अस्मिता : जी हां..। हमारे साथ एक रोबोट रहेगा जो कि ऐसी मुश्किल जगहों पर बहुत आसानी से काम कर सकता है। इस रोबोट को हमारे फिजिक्स के टीचर ने डिजाइन किया है और ये आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस से लैस है।

सुमित्रा : लो जी... यहां भी नई टेक्नालॉजी का बोलबाला...।

राहुल : क्या तुम लोग इसे पहली बार काम के लिए उतारोगे ? देखो, मैं तो एक कारोबारी हूं। कारोबार के सिलसिले में हमें कई सारे प्रोडेक्ट्स और लोगों से वास्ता पड़ता है। लेकिन हम किसी पर तब तक भरोसा नहीं करते जब तक कि उसे अच्छी तरह से परख ना लें।

अस्मिता : हमने अपने रोबोट को स्कूल से फेस्टेवल में टेस्ट किया था। तब हमारे रोबू ने खूब तालियां बटोरीं थीं।

सुमित्रा : ये रोबू कौन है अस्मिता ? लगता है तुम मुझसे कुछ छिपा रही हो।

अस्मिता : ओह मम्मी...। हमारे रोबोट का नाम है रोबू। आपको तो बस हमेशा ही शक रहता है।

राहुल : मुझे तो अब भी तुम्हारे इस रोबू पर ज्यादा भरोसा नहीं है। लेकिन देखते हैं... क्या नतीजा रहता है।

सुमित्रा : और अस्मिता अभी तुम्हें भी इसका ज्यादा तनाव लेने की जरूरत नहीं है। ये मत भूलो कि तुम अभी ग्यारहवीं कक्षा में हो और ये तुम्हारी जिंदगी का बहुत अहम पड़ाव है। और हां, अपने टूर में लगातार मास्क लगाना मत भूलना और हाथों को भी धोने के ख्याल रखना। साथ में हैंडसेनिटाइजर भी रख लेना, काम आएगा।

अस्मिता : मम्मी...। क्या आपको लगता है कि मैं किसी दूसरे ग्रह से आई हूं ? मुझे भी मालूम है कि इन दिनों नोवल कोरोना वायरस का प्रकोप है। मैं पूरा ख्याल रखूंगी। आप लोग चिंता मत कीजिए।

राहुल : जो भी हो... ये एक मुश्किल दौर है सभी को अपना ख्याल खुद ही रखना है। चलो..., बाकी बातचीत बाद में होती रहेगी... अभी मेरे नहाने का वक्त भी हो गया है।

सुमित्रा : अस्मिता, तुम भी अपनी पढ़ाई पूरी कर लो...। एक घंटे बाद फिर लंच का टाइम हो जाएगा।

अस्मिता : ठीक है मम्मी जी।

----------Transition Music / Scene Change----------

(कोचिंग सेंटर के बच्चों से भरा वाहन सुंदरबन के उस इलाके में पहुंच रहा है जहां पर चक्रवात की वजह से काफी नुकसान हुआ है। यहां राहत सामग्री बांटी जानी है। बच्चों की टीम का नेतृत्व भास्कर कर रहे हैं। साथ में नवीन. अंतरा और रंजन भी हैं। / बस के इंजन की आवाज / चिड़ियों की चहचहाहट)

भास्कर : ड्राइवर भैया... गाड़ी रोकिए... यहीं रुकिये..। हम लोग पहुंच गये हैं।

रंजन : सर, पक्का ? यही है वो जगह क्या ? यहां तो आसपास कोई लोग भी नहीं दिखाई दे रहे हैं। हम यहां मदद देंगे तो तो किसको ?

भास्कर : मुझे यकीन है कि हम लोग सही जगह पर पहुंचे हैं। अभी मेरा इंटरनेट कनेक्शन भी काम कर रहा है। वो देखो... उधर... एक टूटी-फूटी बिल्डिंग दिख रही है ना... ? हमारे लिए वही लैंडमार्क है। बीडीओ (खंड विकास अधिकारी) और उनकी टीम भी पहुंचती ही होगी। गांव वाले भी आने शुरू हो जाएंगे।

अंतरा : भास्कर सर, सभी लोग यहीं पर इकट्ठा होंगे क्या ?

भास्कर : वो देखो...। पानी से भरी वो जगह दिख रही है तुमको ?

नवीन : जी सर, वहां दूसरी ओर कुछ झोपड़ियां भी हैं।

अस्मिता : दो मंजिला एक मकान भी नजर आ रहा है।

भास्कर : हां बिल्कुल सही..। विस्थापित लोगों को फिलहाल उसी बिल्डिंग में रखा गया है। वो लोग घर से बाहर आएंगे और रोबू तैरकर वहां पहुंचेगा और उन लोगों को राहत सामग्री दे देगा।

नवीन : (मायूसी भरे स्वर में) इन लोगों को मदद की कितनी ज्यादा जरूरत है। पानी से भरे इस इलाके को पार करके वहां पहुंचना आसान भी तो नहीं है। पता नहीं, कितना गहरा पानी हो यहां पर।

अस्मिता : सर, हम लोग कुछ नावों का इंतजाम करके उस पार नहीं जा सकते क्या ?

भास्कर : एक नाव तो पहुंचने वाली है लेकिन उसमें अभी दो घंटे और लगेंगे। इतनी देर में तो हम लोग रोबू की काबिलियत का इम्तिहान भी ले लेंगे।

रंजन : देखिये सर...। कुछ लोग धीरे-धीरे बिल्डिंग से बाहर को आ रहे हैं। वो देखिये।

भास्कर : चलिए, जल्दी से रोबू का स्विच ऑन कर देते हैं। (रोबोट से स्टार्ट होने का आभास देती हुई आवाज़) अब जरा सबसे पहले रोबू से बातचीत शुरू की जाए। नमस्ते रोबू।

(रोबोट की ओर से कोई जवाब नहीं मिलता है / मशीनी शोर सुनाई देता है)

अंतरा : सर, ये तो जवाब नहीं दे रहा है। कुछ गड़बड़ है क्या ?

भास्कर : जरा सब्र करो...। रोबू बोलेगा...।

रोबू : (रोबोटिक स्वर) नमस्ते भास्कर।

नवीन : सर, इसने तो आपको एकदम से पहचान लिया।

भास्कर : ये तो मेरे बच्चे के समान है नवीन। मैंने इसे बहुत मेहनत और लगन से तैयार किया है। अब हमें रोबू में वहां की लोकेशन फीड करनी होगी जहां पर प्रभावित लोग ठहरे हुए हैं।**(पैनल के स्विच / बटन दबाने की आवाज़) चौंतीस और...। (पैनल के स्विच / बटन दबाने की आवाज़)** हां ये बिल्कुल ठीक है।

अस्मिता: सर, हमारा रोबू पानी के ऊपर ज्यादा वजन तो नहीं उठा सकेगा। ऐसे में क्या होगा ?

भास्कर : मैंने इसकी पूरी तैयारी की हुई है। सबसे पहले मैं दवाइयों के बैग को इसमें लटका दूंगा। रोबू इतना वजन तो आसानी से उठा लेगा। रोबू, तैयार हो ?

रोबू : सामान दीजिए....। यात्रा के लिए तैयार हूं भास्कर।

नवीन : मैं तो रोबू के बोलने के अंदाज से बहुत प्रभावित हूं। (मजाकिया अंदाज में) बस जरा नाक से बोलता है हमारा रोबू।

भास्कर : नवीन, हम कोई मल्टीनेशनल कंपनी तो हैं नहीं... कि सोफिया जैसा रोबोट अपनी लैब में बना लें। हमारी जितनी हैसियत है, उसी हिसाब से हमने रोबू को तैयार किया है।

अस्मिता: सही बात है सर। कम संसाधनों में ही ऐसा हाईटेक प्रोडेक्ट बनाना कोई मामूली बात तो है नहीं।

नवीन : (फुसफुसाते हुए) इतना तो हमें भी मालूम ही है। ज्यादा मक्खन मत लगाओ अस्मिता।

अस्मिता : (दबे स्वर में) मैं कोई चापलूसी नहीं कर रही हूं नवीन। कभी चीजों को सही तरह से भी समझ लिया करो।

भास्कर : दवाइयों के बैग सही तरीके लटका दिए गये हैं। अब हम इसे उस पार भेजेंगे। जाओ रोबू...। जाओ। **(एक तेज आवाज के साथ रोबोट पानी पर तैरना शुरू कर देता है)**

अंतरा : वाह...। ये होवरक्राफ्ट का जैसा सिस्टम तो बहुत बढ़िया से काम कर रहा है। कितने मजे से तैर रहा है रोबू।

रंजन : हां.. इसकी तो रफ्तार भी काफी अच्छी है।

अस्मिता: सर, वहां देखिये... क्या हो रहा है उस पार..? कुछ हलचल बढ़ गई है वहां।

भास्कर : क्यों ? क्या हुआ...?

अंतरा : लगता है, वो लोग इस मशीन से डर रहे हैं।

रंजन : सर, अगर हम लोग लाउडस्पीकर का इस्तेमाल करते तो शायद अच्छा रहता।

अंतरा : हां, हम यहीं से उनके डर को दूर कर सकते थे।

भास्कर : इसकी कोई जरूरत नहीं है रंजन। रोबू किसी इंसान की तरह तो दिखता नहीं है। लोगों का डर स्वाभाविक ही है। लेकिन रोबू उन लोगों को ये बताने में सक्षम है कि वो रिलीफ मिशन (relief mission.) का हिस्सा है।

अस्मिता: लेकिन सर, हमने रोबू को ऐसे हालात से निपटने की कोई ट्रेनिंग तो नहीं दी है। क्या बोलना है, वो कैसे तय करेगा ?

भास्कर : तुम सही कह रही हो... लेकिन रोबू में टेक्स्ट टू वाइस सिस्टम (Text to voice system) का भी इंतजाम है। मैं यहां से टेक्स्ट मैसेज भेजूंगा और रोबू उसे ऊंची आवाज में

सबको सुना देगा। वो इसे याद भी रखेगा और दोबारा ऐसे हालात होने पर खुद ही मैजेस को दोहरा भी देगा।

नवीन : सर, रोबू पानी के उस पार पहुंच गया है। लोग अब भी डरे हुए हैं। डर के मारे वो रोबू के करीब नहीं आ रहे हैं।

भास्कर : रुको...। मैं इस माइक्रोवेव स्पीकर को ऑन करता हूं। इससे हम ये सुन पाएंगे कि रोबू क्या बोल रहा है। सुनो... ये शोर तब सुनाई देता है जब रोबू कोई बात बोलने वाला होता है।
(पानी के दूसरे छोर पर बोली जाने वाली रोबोट की आवाज स्पीकर पर सुनाई देती है)

रोबू : डरो मत... डरो मत...। मैं रोबू हूं...। मैं आप लोगों की मदद के लिए आया हूं..। मेरे पास आओ...। डरो मत।

अंतरा : सर, लगता है लोगों का डर अब भी बना हुआ है। वो लोग दूर से ही रोबू को घूर रहे हैं।

रंजन: मेरे ख्याल से रोबू के संदेश को फिर से दोहराना होगा।

भास्कर : रुको जरा...। अगर रोबू को लगेगा कि उसकी बात का असर नहीं हुआ है तो वो अपना संदेश खुद ही दोहरा देगा।

रोबू : डरो मत.. डरो मत...। मैं रोबू हूं।....

अस्मिता : सही कहा सर। रोबू संदेश को दोहरा रहा है। वो देखिए, दो आदमी उसकी तरफ आ रहे हैं।

भास्कर : रोबू उन लोगों को ये भी बताएगा कि इन दवाइयों को कैसे रखना है और कैसे खाना है।

रंजन : लेकिन वहां तो काफी सारी दवाइयां हैं... और वो लोग उन सभी दवाइयों के नाम भी नहीं जानते हैं।

भास्कर : रंजन, ये कुछ अलग किस्म का राहत कार्य है। रोबू दवाइयों के नाम बोलकर सुनाएगा और ये भी बताएगा कि वो टेबलेट है या सिरप। साथ ही उसकी मात्रा के बारे में भी जानकारी देगा।

नवीन : सुनिये सर, वो बता भी रहा है।

रोबू : पैरासिटामॉल। टेबलेट। चपटी और गोल...।

अस्मिता : वाह... ये तो बहुत शानदार है सर। रोबू को देखकर तो लग रहा है कि आपने पिछले दो हफ्ते इसके सॉफ्टवेयर की जुगत में ही लगाए होंगे।

भास्करः मेहनत का फल मीठा ही होता है अस्मिता....। इन बातों को छोड़ो... देखो बीडीओ मैडम आ रही हैं। नमस्ते ज्योति जी... आइये .. आइये... स्वागत है आपका।

ज्योति : (हंसते हुए) नमस्ते भास्कर जी... स्वागत तो मुझे आपका करना चाहिए... आखिर आप हमारे मेहमान भी हैं और मददगार भी। वैसे, आपको रोबू नहीं दिखाई दे रहा। कहां है वो ?

भास्कर : वो देखिए मैडम... पानी से भरे इलाके के उस पार। रोबू उन लोगों को अभी दवाइयों के बारे में बता रहा है और इसके बाद वो दवाइयां बांटेगा। वहां की बातचीत को आप इस स्पीकर से सुन सकती हैं।

ज्योति : हां... मैं सुन रही हूं..।

अस्मिता : (चिंतित स्वर में) सर, लगता है वहां कुछ दिक्कत हो गई है। रोबू के हाथ में अजीब सी हरकत नजर आ रही है। देखिए सर..।

ज्योति : हां, कोई आदमी रोबू के सामने चिल्ला रहा है और वो काफी गुस्से में लग रहा है। मुझे यहां कुछ पुलिस का इंतजाम करना चाहिए था। दरअसल परेशानी के चलते, इन दिनों लोग जल्दी ही बेकाबू हो जा रहे हैं।

भास्कर : रुकिये जरा...। जरा सुन तो लें कि वो शख्स आखिर क्या कह रहा है। रंजन, जरा स्पीकर का वाल्यूम तो बढ़ाओ।

रंजन : ठीक है सर। (रोबू और स्थानीय लोगों की बातचीत का वाल्यूम बढ़ता हुआ)

पहला आदमी : (जोर से / गुस्से में) हमारा राशन खत्म हो गया है। हमें चाहिए था खाना, और उन लोगों ने इस खिलौने के हाथों दवाइयां भेज दीं !

दूसरा आदमी : सही बात है, कम से कम दाल-चावल तो भेजते।

ज्योति : वहां तो लोगों ने अपना गुस्सा दिखाना शुरू कर दिया है।

भास्कर : हां, रोबू भी हैरान हो गया है। गुस्से और हताशा की ऐसी स्थिति का सामना वो पहली बार कर रहा है।

ज्योति : (चिंतित स्वर में) भास्कर जी, हो सके तो रोबू को जल्दी से वापस बुला लीजिए। मुझे डर है कि कहीं वो लोग गुस्से में रोबू को कोई नुकसान ना पहुंचा दें।

भास्कर : वापस बुलाना कोई मुश्किल नहीं है। मैं इस बटन को दबाता हूं। (बीप की आवाज़) अब रोबू पीछे हटना शुरू करेगा... और फिर तैरकर वापस हमारे पास आ जाएगा।

ज्योति : (उत्साहित स्वर में) हां.. देखिए वो पीछे हट रहा है। अब मुझे कुछ सुकून पहुंचा। जल्दी ही नाव भी पहुंच जाएगी तो राहत सामग्री को हम उसकी मदद से पहुंचा देंगे। मैं नहीं चाहती कि रोबू को किसी तरह का नुकसान पहुंचे।

भास्कर : (हंसते हुए) मैडम लगता है आपको भी हमारी तरह ही रोबू से लगाव हो गया है।

ज्योति : टेक्नोलॉजी से मेरा वास्ता तो काफी पुराना है। मैंने मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है और मैं रोबोट बनाने वाली किसी कंपनी का हिस्सा बनना चाहती थी। लेकिन ... कई बार हम सोचते कुछ हैं और हो कुछ जाता है।

अंतरा : मैम... रोबू को भास्कर सर ने ही डिजाइन किया है।

ज्योति : मुझे मालूम है। तभी तो मैं रोबू को देखने को उत्सुक थी। मैं भी रोबोटिक्स और आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस के बारे में अक्सर पढ़ती रहती हूं। वैसे, देखा जाए तो बीते दौर में भी एआई का साथ किसी ना किसी रूप में रहा ही है।

नवीन : वो कैसे मैम ? इस बारे में हमें भी कुछ बताइये।

रंजन (मजाकिया लहजे में) : हां, जब तक रोबू वापस आता है, तब तक कुछ ज्ञान ही बढ़ा लें।

ज्योति : देखिये, आजकल जब भी रोबोट की बात होती है तो किस्मत (Kismet) और सोफिया (Sophia) का जिक्र जरूर होता है। किस्मत नाम का रोबोट सन दो हजार (2000) में बनाया गया था। और सोफिया को बनाया था सन दो हजार सोलह (2016) में, प्रोफेसर सिंथिया ब्रेज़ील (Cynthia Breazeal) ने।

भास्कर : हां, वो रोबोट इंसानी चेहरों के हावभाव को पहचान सकता था और उनकी नकल भी उतार लेता था।

ज्योति : बिल्कुल सही। इसमें लगे चार कैमरे ही इसकी आंखे थीं। हालांकि देख सकने के मामले में उसकी अपनी सीमाएं थीं।

अस्मिता : और नईनवेली सोफिया के बारे में भी तो कुछ बताइये मैम।

ज्योति : पिछले रोबोटों की तुलना में सोफिया रोबोट इसलिये एकदम अलग है क्योंकि उसकी बनावट बिल्कुल इंसानो की तरह है। सोफिया को हांगकांग की एक कंपनी हेंसन रोबोटिक्स (Hanson Robotics) ने तैयार किया था।

भास्कर : हां, वो लोगों के चेहरे के भावों को समझ सकती है, बातचीत कर सकती है और उसके खुद के चेहरे पर भी बातचीत के मुताबिक भाव नजर आते हैं। दरअसल उसमें इमेज रिकॉग्निशन (Image Recognition) तकनीक का इस्तेमाल किया गया है।

ज्योति : लेकिन मेरे ख्याल से सोफिया को कुछ ज्यादा ही तवज्जो मिल गई।

नवीन : देखिए सर... रोबू लौट आया है। मैं उसे पानी से बाहर निकाल लेता हूं।

भास्कर : जरा ध्यान से नवीन..। उसके हाथों पर ज्यादा जोर मत देना। क्या पता उसमें कुछ गड़बड़ी हो रही हो।

ज्योति : (फोन की कॉल रिसीव करते हुए) हेलो.. जी हैं.. मैं बोल रही हूं। ठीक है–ठीक है .. जरा जल्दी कीजिए। (**फटाफट बातचीत खत्म करती है**) भास्कर जी, नाव दस मिनट में यहां पहुंच रही है। ऐसी परेशानी की हालत में तो नाव भी मुश्किल से ही मिलती है।

अस्मिता : हमारे रोबू को तो नाव की भी जरूरत नहीं...। ये और बात है कि उसकी क्षमता कुछ कम है।

ज्योति : हां, वो तो मैंने देख ही लिया। लेकिन फिर भी उसने काफी अच्छा काम किया है। भास्कर जी, ऐसा करते हैं कि... मैं अपनी कार और ड्राइवर को यहां छोड़ देती हूं। वो देख लेगें कि राहत सामग्री नाव से उस पार लोगों तक सही सलामत पहुंच जाए। तब तक आप लोग मेरे क्वार्टर में चलिए। हम लोग आपकी गाड़ी से चलेंगे। आप लोग हाथ-मुंह धोकर फेश हो लेंगे और मुझे भी रोबू के बारे में बातचीत का कुछ मौका मिल जाएगा।

भास्कर : लेकिन मैम...।

ज्योति : आप फिक्र मत कीजिए। नाव के साथ जो लोग आ रहे हैं वो राहत सामग्री को सही तरीके से जरूरतमंदों तक पहुंचा देंगे। सामान बांटने के दौरान वो कुछ फोटो भी ले लेंगे और आपके फोन पर भेज देंगे, ताकि आपके रिकॉर्ड में भी रहे। क्यों बच्चो, ठीक रहेगा ना ऐसा ?

रंजन : बिल्कुल सही मैम..। हमें भी आपसे आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस के बारे में बातचीत का कुछ और वक्त मिल जाएगा।

भास्कर : मैम.. ये बच्चे तो आपके मुरीद हो हो गए हैं। मैं तो कुछ फैसला लेने की स्थिति में हूं ही नहीं। जैसा आप लोगों का हुकुम। (भास्कर और दूसरे सभी लोग हंसते हैं)

ज्योति : तो ठीक है, चलिए, चलते हैं।

-------Transition Music / Scene Change------

(सभी लोग ज्योति के क्वार्टर में जमा हुए हैं / सभी को कॉफी और स्नैक्स दिया गया है)

ज्योति : बच्चो...। अपनी-अपनी कॉफी के कप खुद ही उठाओ। ये कोल्ड कॉफी नहीं है जो आप लोग ठंडी होने का इंतजार कर रहे हैं।(सभी हंसते हैं)

भास्कर : मैम, आपने इमोशन एआई (Emotion AI) के बारे में तो सुना ही होगा ?

ज्योति : हां, थौड़ा बहुत तो मालूम ही है..।

अंतरा : इमोशन एआई (Emotion AI) ! सुनने में तो कुछ अजीब लग रहा है।

ज्योति : दरअसल एमआईटी (MIT) यानी Massachussets Institute of Technology ने इमोशन एआई को...।

भास्कर : (बात को बीच में काटते हुए) इनको मैं समझाता हूं मैम। देखिए, इमोशन एआई को आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस की ही एक शाखा समझिए। इसमें इंसानी मनोभावों को परखा-समझा जाता है और साथ ही उनके हिसाब से प्रतिक्रिया दी जाती है। इमोशन एआई को इफेक्टिव कंप्यूटिंग या फिर आर्टिफीशियल इमोशनल इंटेलीजेंस भी कहा जाता है।

रंजन : वाह.. शानदार ! लेकिन सर हम लोग इसका इस्तेमाल अपने रोबू में क्यों नहीं करते ?

भास्कर : जरा सब्र करो रंजन। पहले ये तो समझ लेते हैं कि कि इमोशन एआई का असल मतलब है क्या ... यानी ये कैसे काम करती है ?

ज्योति : हां, देखो मैं बताती हूं। ये मशीनें आवाज़ में आए बदलावों को पहचानना शुरू करती हैं। खास तौर से ऐसे बदलाव जो गुस्से या तनाव के दौरान नजर आते हैं। इसके साथ-साथ मशीनें कैमरों की मदद से इंसानी चेहरों पर आए छोटे-छोटे भावों को भी दर्ज करती हैं। आदमी की नजर से भले ही चूक हो जाए लेकिन इनके ताकतवर कैमरों से कुछ नहीं छिप सकता।

अस्मिता : मैम, इस आर्टिफीशियल इमोशनल इंटेलीजेंस का कहीं तो इस्तेमाल होता होगा ना ?

ज्योति : एक बार एमआईटी के एक प्रोफेसर ने कहा था कि जो मशीनें भावों के जरिए बातचीत कर सकती हैं वो ज्यादा इंसानों के साथ ज्यादा प्रभावी तरीके से संवाद कायम करेंगी। ये काफी खुशी की बात है कि मौजूदा वक्त में इस लिहाज से काफी कुछ प्रगति हो भी चुकी है। बीस-तीस साल पहले जो बातें सिर्फ कोरी कल्पना लगती थीं आज वो हकीकत बनकर हमारे सामने हैं।

भास्कर : एमआईटी के ही एक छात्र ने वहां से पढ़ाई के बाद खुद की एक कंपनी बनाई जो इमोशन एआई के क्षेत्र में काम करती है। कई सारे कॉल सेंटर्स ने उस कंपनी की सेवाएं लीं। कंपनी का वाइस एनालिटिक्स सॉफ्टवेयर (Voice-Analytics Software) कॉल सेंटर ऐजेंट्स को यह समझने में मदद करता था कि फोन पर बात कर रहे ग्राहक का मूड कैसा है। इससे कॉल सेंटर को अपने ग्राहकों के मसलों को निपटाने में सहूलियत रहती है।

नवीन : हां सर, मुझे भी याद आ रहा है कि मैंने टीवी में ऐसी ही एक खबर देखी थी। उसमें बताया गया था कि एमआईटी मीडिया लैब्स ने मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health) से जुड़ी एक आर्टीफीशियल इंटेलीजेंस तकनीक ईजाद की है। इस डिवाइस को कोई शख्स पहन लेता है। इसके बाद डिवाइस उस शख्स के दिल की धड़कनों के जरिए ये आंकलन करती है कि उसे किसी तरह के दर्द, तनाव या उदासी का अनुभव तो नहीं हो रहा है। ऐसा होने की सूरत में डिवाइस में से खुद ही शानदार खुशबू निकलने लगती है ताकि उस शख्स के नकारात्मक मूड को कुछ बेहतर किया जा सके।

अस्मिता : वाह नवीन...। तुमने तो बड़ी शानदार बात बताई। इसका मतलब ये हुआ कि हम लोग भी जल्द ही रोबू में इस तरह की कोई अनूठी डिवाइस लगा सकेंगे। और फिर रोबू भी हमारे मूड को अच्छी तरह से समझेगा और उसके मुताबिक ही काम भी करेगा।

भास्कर : देखो अस्मिता...। तुम्हारी बातें सुनकर रोबू में कुछ हरकत हो रही है।

अस्मिता : हां सर..। लगता है वो कुछ कहना चाह रहा है।

रोबू : (रोबोटिक स्वर) काम खत्म नहीं हुआ। राहत सामग्री वितरण का कार्य पूरा नहीं हुआ।

ज्योति : (चौंकते हुए) भास्कर जी, मैं कोई सपना तो नहीं देख रही हूं। लगता है तुम्हारे रोबोट ने भावनाओं को समझना शुरू कर दिया है। सुनो जरा...। इसकी बातों से लग रहा है कि वो अपनी जिम्मेदारी को समझ रहा है।

भास्कर : हां... । रोबू की बात से तो मैं भी हैरान हूं।

ज्योति : शाबाश रोबू...। लेकिन तुम्हारी इस अदा पर हम लोग तुम्हें चाय - कॉफी तो नहीं पिला सकते ना। लेकिन खुशी जताने के लिए क्यों ना हमारे लिए चाय-नाश्ते का एक दौर और हो जाए...।

अंतरा : हां मैम...। ये शानदार आईडिया है। (हंसते हुए) और इसे हम लोग कहेंगे रोबू पार्टी...।

(सभी के हंसने की आवाज़)

----------Closing Music----------